आला हज़रत का आज से एक सौ ग्यारह (111) साल पहले लिखा गया रिसाला

खेज़ाब सबबे अज़ाब

☆ तसनीफ़ ☆

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ फ़ाज़िले बरेलवी

☆ नाशिर ☆

मकतबतुल मदीना

मेमन वाड़ा रोड, मीनारा मस्जिद, मुंबई

Scanned by CamScanner

ZEBNEWS.IN

PRESENTED BY

NAUSHAD AHMAD "ZEB" RAZVI

ALLAHABAD

Scanned by CamScanner

काला ख़ेज़ाब हराम है

सोला हदीसों और अक़वाले अइम्मा से सुबूत

حک العیب فی حرمۃ تسوید الشیب

का हिन्दी तरजमा

ख़ेज़ाब का मस्अला

तसनीफ़

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे आज़म मौलाना अश्शाह

इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी

तरजमा

मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ अशरफ़ी रज़वी

नाशिर

मकतबतुल मदीना

मेमन वाड़ा रोड़, मीनारा मस्जिद, मुंबई.

Scanned by CamScanner

بسم اللہ الرحمن الرحیم
نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم

मस्अला

अज़:— बास बरेली शहर कुहन्ह मसओला जनाब मुहम्मद शफ़ी अली ख़ाँ साहब

23 रबीउल अव्वल शरीफ़ 1037 हि.

क्या फ़रमाते हैं ओलमा—ए—दीन व मुफ़्तीयाने शरऐ मतीन इस मस्अले में कि ख़ेज़ाब नील का जिस से बाल काले हो जाए जाइज़ है या नहीं और नील (यानी काले ख़ेज़ाब) में हिना (मेहन्दी) मिला कर लगाना दुरूस्त है या नहीं ? بینوا توجروا—

अलजवाब

सही मज़हब में काला ख़ेज़ाब हालते जिहाद (काफ़िरों से जंग की हालत)के सिवा बिल्कूल ही हराम है जिस के हराम होने पर भरोसेमन्द सही सुबूत हैं। فاقول وباللہ التوفیق۔

हदीस ① :— अहमद व मुस्लिम व अबूदाऊद व नसाई व इब्ने माजा हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत करते हैं हुज़ूर सैय्यदे आलम—صلی اللہ علیہ وسلم—ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़े अकबर—رضی اللہ عنہ—के वालिदे माजिद हज़रत अबू क़ुहाफ़ा—رضی اللہ تعالیٰ عنہ— की दाढ़ी ख़ालिस सफ़ेद देख कर इरशाद फ़रमाया غیروا ھذا بشیئ واجتنبوا السواد इस सफ़ेद दाढ़ी को किसी चीज़ से बदल दो और काले रंग से बचो (यानी दाढ़ी काली न करो बल्कि दूसरे रंग से ख़ेज़ाब करो)

हदीस ②:— इमाम अहमद अपनी मुस्नद में हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं हुज़ूरे अक़दस फ़रमाते है————

غیروا الشیب ولا تقربوا السواد || पीरी (बूड़ापे) की तबदीली करो और काले रंग के पास न जाओ ।

हदीस ③:— इमाम अहमद व अबूदाऊद व नसाई व इब्ने हिब्बान व हाकिम ग़लतियों को ख़त्म कर के और ज़िया मुख़तारह और बयहकी सुनन में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत करते है—

Scanned by CamScanner

हुज़ूरे वाला-صلی اللہ علیہ وسلم-फ़रमाते है ---

आख़िर ज़माने में कुछ लोग काला ख़ेज़ाब करेंगे जैसे कबूतरों के सीने वोह लोग जन्नत की बू न सूंगेंगे (यानी वोह जन्नत में न जाएगें) ।	يَكُوْنُ قَوْمٌ فِيْ اٰخِرِ الزَّمَانِ يَخْضِبُوْنَ بِهٰذَا السَّوَادِ كَحَوَاصِلِ الْحَمَامِ لَا يَجِدُوْنَ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ ۔

जंगली कबूतरों के सीने अक्सर काले व नेलगूं होते हैं नबी —صلی اللہ علیہ وسلم— ने उन के बालों और दाढ़ियों को उन से तश्बीह (मिसाल) दी ।

हदीस ④:— इब्ने सआद आमिर رحمۃ اللہ تعالے मुर्सलन रिवायत करते है कि हुज़ूर सैय्यदे आलम-صلی اللہ علیہ وسلم-फ़रमाते है ----

जो काला ख़ेज़ाब करे अल्लाह तआला रोज़े क़ियामत उस की तरफ़ नज़रे रहमत न फ़रमाएगा ।	اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى لَا يَنْظُرُ اِلٰى مَنْ يَّخْضِبُ بِالسَّوَادِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۔

हदीस ⑤:— इब्ने अदी "कामिल" में और वयलमी मुस्नदुल फ़िरदोस में हज़रत अबूहुरैरा —رضی اللہ عنہ—से रिवायत करते है हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم इरशाद फ़रमाते है --------

बेशक अल्लाह तआला दुश्मन रखता है बूड़े कव्वे को ।	اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى يُبْغِضُ الشَّيْخَ الْغِرْبِيْبَ ۔

(यानी इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़दस ने उस बूड़े को जो काला ख़ेज़ाब लगाए उसे बूड़ा कव्वा फ़रमाया) ।

तअलीक़ात अल्लामा ख़फ़ी में है -----

ग़िरबीब (बहुत ज़्यादा काला) वोह है जो अपनी सफ़ेदी (यानी सफ़ेद बालों को) काला करे ।	اَلْغِرْبِيْبُ اَيْ الَّذِيْ يُسَوِّدُ شَيْبَهٗ

अज़ीज़ी में है ------

बहुत ज़्याद काला वोह है जो सफ़ेद नहीं होता या वोह जो अपनी सफ़ेदी को ख़ेज़ाब से काला करे ।	اَلْغِرْبِيْبُ الَّذِيْ لَا يَشِيْبُ اَوِ الَّذِيْ يُسَوِّدُ شَيْبَهٗ بِالْخِضَابِ ۔

Scanned by CamScanner

हदीस ⑥ :— तबरानी मुअ़जमे कबीर में और हाकिम मुस्तदरिक में अब्दुल्लाह बिन उमर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہما से रिवायत करते है हुज़ूर पुरनूर — صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ — फ़रमाते है ।

اَلصُّفْرَةُ خِضَابُ الْمُؤْمِنِ وَالْحُمْرَةُ خِضَابُ الْمُسْلِمِ وَالسَّوَادُ خِضَابُ الْكَافِرِ —

पीले रंग का ख़ेज़ाब ईमान वालों का है और लाल रंग का ख़ेज़ाब इस्लाम वालों का और काला ख़ेज़ाब काफ़िरों का ।

हदीस ⑦ :— अक़ीली और इब्ने हिब्बान व इब्ने असाकर अनस — رضی اللہ عنہ से रिवायत करते है हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है —

اَلشَّيْبُ نُوْرٌ مَنْ خَلَعَ الشَّيْبَ فَقَدْ خَلَعَ نُوْرَ الْاِسْلَامِ ـ

सफ़ेदी (यानी सफ़ेद बाल) नूर है जिस ने उसे छुपाया उस ने अपने इस्लाम का नूर बरबाद किया ।

अल्लामा मुहम्मद ख़फ़ी इस हदीस की शरहे में फ़रमाते है ।

خَلَعَ الشَّيْبَ اَيْ اَزَالَهُ فَسَتَرَهُ بِاَنْ خَضَبَهُ بِالسَّوَادِ فِيْ غَيْرِ جِهَادٍ —

यानी सफ़ेदी बरबाद कर दी इस का मतलब येह हुआ कि सफ़ेदी (सफ़ेद बालों) को जिहाद के अलावा ख़ेज़ाब कर के छुपा लिया ।

अल्लामा मुनावी फिर अल्लामा अज़ीज़ी इस हदीस पर तब सेरा करते हुए कहते हैं — — — — —

نَتْفُهُ مَكْرُوْهٌ وَصِبْغُهُ بِالسَّوَادِ لِغَيْرِ الْجِهَادِ حَرَامٌ —

यानी सफ़ेद बाल उखाड़ना मकरूह है और काला ख़ेज़ाब जिहाद के अलावा हराम है ।

हदीस ⑧ :— हाकिम "किताबुल कुना वल अलकाब" में ब सनदे हसन उम्मे सलीम — رضی اللہ تعالیٰ عنہا — से रिवायत करते है कि हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है — — — — — —

مَنْ شَابَ شَيْبَةً فِي الْاِسْلَامِ كَانَتْ لَهُ نُوْرًا مَا لَمْ يُغَيِّرْهَا

जिसे इस्लाम में सफ़ेदी आए (यानी जिस मुसलमान के बाल सफ़ेद हो जाए) वोह उस के लिए नूर होंगी जब तक उसे बदल न ड़ाले

Scanned by CamScanner

हदीस ⑨ :— वयलमी व इब्नुल नज्जार हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत करते है हुज़ूर पुरनूर सैय्यदे आलम -صلی اللہ علیہ وسلم- फ़रमाते है ---

اول من خضب بالحناء والكتم ابراهيم عليه السلام واوّل من اختضب بالسواد فرعون —

सब से पहले हिना (महेन्दी) व कतम[1] से ख़ेज़ाब करने वाले "इब्राहीम" है और सब से पहले काला ख़ेज़ाब करने वाला "फ़िरओन" है ।[2]

अल्लामा मुनावी इस हदीस के नींचे लिखते है ------

فلذالك كان الاول مندوبا و الثانى محرما الا للجهاد —

यानी इस लिए पहला ख़ेज़ाब (मेहन्दी का) मुस्तहब (अच्छा) है और दूसरा काला ख़ेज़ाब जिहाद के अलावा हराम ।

हदीस ⑩ :— तबरानी "मुअजमे कबीर" में और इब्ने अबी आसिम "किताबुस्सुन्नत" में हज़रत अबू दरदा -رضی اللہ عنہ- से रिवायत करते है हुज़ूर सैय्यदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है --------

مَنْ خَضَبَ بِالسَّوَادِ سَوَّدَ اللّٰهُ وَجْهَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ —

जो काला ख़ेज़ाब करेंगा अल्लाह तआला क़ियामत के रोज़ उस का मुँह काला करेंगा ।

हदीस ⑪ :— और तबरानी कबीर में ब सनदे हसन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास -رضی اللہ عنہ- से है हुज़ूर पुरनूर صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है --

من مثل بالشعر فليس له عند الله خلاق

जो बालों की अस्ल हालत बिगाड़े (यानी काले ख़ेज़ाब से अपने बालों के सफ़ेद रंग को बदले) अल्लाह के यहाँ उस के लिए कुछ हिस्सा नहीं ।

---

[1] कतम एक क़िस्म की पत्ती है जिसे लगाने से बाल लाल रंग के होते हैं ।

[2] फ़िरौन हज़रत मुसा علیہ السلام के ज़माने का एक बदबख़्त ज़ालिम बादशाह था जिसने ख़ुदा होने का दावा किया था और आख़िर कार कुफ़्र की हालत में ही दरिया–ए–नील में डूब कर मरा ।

। फ़ारूक ।

ओलमा फ़रमाते हैं हालत बिगाड़ना के मअ़नी येह हैं कि दाढ़ी मून्डें या ख़ेज़ाब करें।"

'तैसर' में है ------

ای صیرہ مثلہ بالضم بان نتفہ اوحلقہ من الخدود اوغیرہ بسواد

यानी दाढ़ी के बालों को बिगाड़ दिया या किसी और तौर पर उखाड़ दिया या उस को चेहरह से मून्ड़ दिया या उस को काले रंग से बदल दिया।

हदीस (12) से (15) :— "अबू यअ़ला" मुस्नद और "तबरानी" कबीर में वासला बिन असक़अ और "बयहक़ी" शुअ़ेबुल ईनाम में अनस बिन मालिक व अब्दुल्लाह बिन अब्बास और इब्ने अदी कामिल में अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہم से रिवायत करते है हूज़ुरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते है -----

شرکھو لکم من تشبہ بشبابکم

तुम्हारे अधेड़ों में (यानी अधेड़ उमर लोगों में) सब से बदतर वोह है जो जवानों की सी सूरत बनाए।

इमाम अबू तालिब मक्की "क़ुव्वतुल क़ुलूब" में और इमाम हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद गज़ाली "इहयाऊल उलूम" में फ़रमाते है-

الخضاب بالسواد منھی عنہ لقولہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم خیر شبابکم من تشبہ بشیوخکم وشر شیوخکم من تشبہ بشبابکم

काला ख़ेज़ाब मना है हुज़ूरे अक़दस के इरशाद फ़रमाने की वजह से कि तुम्हारे जवानों में सब से बेहतर वोह है जो अपने बड़ो की सी सूरत बनाए और तुम्हारे अधेड़ो में सब से बदतर वोह है जो अपने जवानों की सी सूरत बनाए।

हदीस (16) :— इब्ने सअ़ाद तबक़ात में अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत करते है कि ----

نھی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عن الخضاب بالسواد

रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने काले ख़ेज़ाब से मना फ़रमाया।

अफ़सोस ! कि ज़रा से नफ़सानी शौक़ के लिए आदमी ऐसी सख़्तियों

Scanned by CamScanner

को गवारा करें।

"मुहीत" में है ----

اَلْخِضَابُ بِالسَّوَادِ قَالَ عَامَّةُ الْمَشَائِخِ اَنَّهٗ مَكْرُوْهٌ —

काले ख़ेज़ाब को आम मशाएख़ (सभी बुज़ुर्गों) ने मकरूह फ़रमाया हैं।

"ज़ख़ीरह" में है– عَلَيْهِ عَامَّةُ الْمَشَائِخِ –दुर्रे मुख़्तार में हैं يكره بالسواد وقيل لا– इन तीनों इबारतों का यही हासिल हैं कि आम मशाएख़ – ए – किराम व आम अइम्मा-ए-अलाम के नज़दीक काला ख़ेज़ाब मना है। ओलमा जब कराहते मुतलक़ (यानी बग़ैर किसी क़ैद के ना पसंद) बोलते हैं उस से कराहते तहरीम (यानी ना जाइज़) मुराद लेते हैं जिस का करने वाला गुनाहगार व अज़ाब का मुस्तहिक़ है। والعياذ بالله تعالىٰ ———

अल्लामा सैय्यद हुमूवी फिर अल्लामा सैय्यद तहतावी फिर अल्लामा सैय्यद शामी– رحمهم الله تعالىٰ –फ़रमाते हैं ----

هذا في حق غير الغزاة ولا يحرم في حقهم للارهاب —

यानी काले ख़ेज़ाब का हराम होना उस के हक़ में है जो जिहाद में न हो और ग़ाज़ियों (जिहाद में काफ़िरों से जंग करने वालों) के हक़ में काफ़िरों के ड़राने के लिए हराम नहीं।

शेख मोहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मोहद्दिस दहलवी رحمة الله عليه "शरहे मिश्कात शरीफ़" में फ़रमाते है -----

پیری نور الٰہی ست وتغیر نور الٰہی بظلمت مکروہ و وعید در باب خضاب سیاہ شدید آمدہ اھ ملخصاً

सफ़ेदी (सफ़ेद बाल) नूरे ख़ूदा, है और नूरे इलाही को तारीकी (काले रंग से) बदल देना मकरूह है और काले ख़ेज़ाब के बारे में सख़्त अज़ाब की ख़बरें आई हैं।

उसी (शरहे मिश्कात) में है -----

خضاب بسواد حرام است وصحابہ وغیرہم خضاب سرخ می کردند وگاہے زرد نیز اھ ملخصاً

काला ख़ेज़ाब हराम है और सहाबा–ए–किराम और उन के अलावा दूसरे हज़रात लाल ख़ेज़ाब इस्तेमाल करते थे और कभी पीला भी।

Scanned by CamScanner

इन्हीं जुमलों के साथ यही बात "मुख़्तार" व "मन्सूर" और तमाम इमामों के मज़हब में साबित, जैसा कि हुज़ूर पुरनूर —صلی اللہ علیہ وسلم— का इरशाद है। और शक़ नहीं कि हदीसों और रिवायतों में साफ़ काले रंग से मना फ़रमाया गया। तो जो चीज़ बालों को काला करे चाहे निरा नील या मेहन्दी का मैल या कोई तेल, ग़र्ज़ कुछ भी हो सब ना जाइज़ व हराम और उन अज़ाब की ख़बरों में दाख़िल है हदीस व फ़िकह में अगर सिर्फ़ ख़ालिस नील को मना किया गया होता और बाकी काले ख़ेज़ाब की इजाज़त होती तो बेशक मेहन्दी की मिलावट काम देती। अब कि साफ़ तौर पर काले रंग के ख़ेज़ाब को हराम फ़रमाया तो जब तक इस कदर मेहन्दी न मिले जो नील पर ज़्यादा आ जाए उस के काले पन को दूर कर दे, क्या काम दे सकती है कि हराम होने की वजह काला रंग होना अब भी बाकी, जो सही हदीसों में आया है कि हज़रत सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ تعالیٰ عنہ मेहन्दी और कतम से ख़ेज़ाब फ़रमाते थे हरगिज़ फ़ाएदेमन्द नहीं कि ओलमा के कहने के मुताबिक़ हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ जो ख़ेज़ाब लगाते थे वोह ख़ेज़ाब काला रंग न देता था बल्कि लाल रंग लाता था जिस में काले रंग की हलकी सी झलक होती थी लाल रंग का क़ाएदा है जब निहायत क़ुव्वत को पहुँचता है एक काले रंग की झलक देता है ऐसा ख़ेज़ाब बेशक जाइज़ बल्कि बहुत पसंदीदा जिस की तअरीफ़ सही हदीस में ख़ूद हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم से नक़ल है, रिवायत किया इसे इमाम अहमद व इब्ने हिब्बान ने हज़रत अबी ज़र — رضی اللہ عنہ — से।

शेख़ मोहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक़ मोहद्दीस दहलवी — نور اللہ مرقدہ "शरहे मिश्कात" में फ़रमाते है — — — — —

सही रिवायत में है हज़रत अमीरूल मोमेनीन सैय्यद अबूबक्र सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ मेहन्दी और कतम से ख़ेज़ाब करते थे जो एक घास का नाम है मगर उस का रंग काला नहीं बल्कि लाल हल्का सा काला है।	بصحت رسیدہ است کہ امیر المومنین ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ خضاب می کرد بحنا و کتم کہ نام گیاہے است لیکن رنگ آن سیاہ نیست بلکہ سرخ مائل بسیاہی است —

इसी के क़रीब अल्लामा अ़ली क़ारी ने "जम्अऊल वसाएल शरहे शुमाएल शरीफ़" तिर्मिज़ी और इमाम अहमद क़ुस्तलानी ने इरशादुस्सारी शरहे सही बुख़ारी शरीफ़ में फ़रमाया है और इसी क़ौल पर —

Scanned by CamScanner

इत्तेफ़ाक़ व तमाम तफ़ासीर में है की कतम नील का नाम भी नहीं बल्कि वोह एक और पत्ती है कि रंग में लाली रखती है देखने में ज़ैतून के झाड़ की पत्तियों से मिलती जुलती होती है जिसे लोग मेहन्दी में मिला कर ख़ेज़ाब करते हैं ।

अल्लामा मुनावी तैसीर शरहे जामअे सग़ीर में फ़रमाते है --

الكتم بفتحتين الكاف والمثناة الفوقية نبت يشبه ورق الزيتون يخلط بالوسمة ويختضب به

एक घास का नाम है जो ज़ैतून के झाड़ की पत्तीयों से मिलती जुलती है नील से मिला कर उसे ख़ेज़ाब बनाते है ।

उसी (तैसीर शरहे जामअे सग़ीर) में है -----

الكتم بفتحتين نبت فيه حمرة يخلط بالحناء او الوسمة فيختضب به (ملخص)

कतम एक घास है जिसमें लाल पन है मेहन्दी या नील से मिला कर उसे ख़ेज़ाब बनाते है ।

अभी शरहे मिश्कात से गुज़रा कि "رنگ آں سیاہ نیست الخ اقول!" (कतम का रंग काला नहीं)— बल्कि फ़क़ीर غفر الله تعالى له ख़ूद हदीसों से साबित कर सकता है कि मेहन्दी व कतम के ख़ेज़ाब का रंग लाल रंग होता था

सही बुख़ारी व मुस्नदे इमाम अहमद व सुनन इब्ने माजा में **उसमान बिन अब्दुल्लाह बिन मोहिब** से रिवायत है ------

قال دخلت على ام سلمة رضى الله تعالى عنها فاخرجت شعرا من شعر رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم مخضوبا (زاد الاخيران) بالحناء والكتم

यानी मैं हज़रत उम्मुलमोमेनीन उम्मे सलमा رضى الله عنها की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उन्होंने हुज़ूरे अक़दस صلى الله عليه وسلم के मूए मुबारक (दाढ़ी शरीफ़) के बाल जो उन के पास तबर्रूकाते शरीफ़ा में रखे थे (जिस बीमार को उस का पानी धो कर पिलाती फ़ौरन अच्छा हो जाता था) वोह बाल शरीफ़ निकाले वोह मेहन्दी और कतम से रंगे हुए थे ।

इन्हीं उसमान बिन अब्दुल्लाह से इन्हीं मुए अक़दस (यानी हूज़ूरे अक़दस صلى الله عليه وسلم के दाढ़ी शरीफ़ के बालों) की निस्बत सही बुख़ारी शरीफ़ में हदीस है ----

ان ام سلمة ارته شعر النبى صلى

यानी उम्मे सलमा رضى الله عنها ने उन्हें

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم احمر —

नबी صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के मुऐं मुबारक लाल रंग के दीखाए ।

साबित हुआ कि मेहन्दी व कतम ने लाल रंग दिया बल्कि इस हदीस में इमाम अहमद — رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ — की दूसरी रिवायत यूँ है ————

ثم ارا احمر مخضوبا بالحناء والکتم —

यानी उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने हुज़ूर की दाढ़ी शरीफ़ के बाल मुबारक लाल रंग के दीखाए जिन पर मेहन्दी व कातम का ख़ेज़ाब था ।

तो ज़ाहिर हुआ कि कतम अगरचे किसी चीज़ का नाम हो मगर उस रिवायत से जो लिखी गई हज़रत सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ تعالیٰ عنہ की तरफ़ काले ख़ेज़ाब का गुमान करना या नील और मेहन्दी के मिले हुए को आम जाइज़ समझ लेना महेज़ ग़लत है अफ़सोस कि हमारे ज़माने के बाज़ साहिबों ने ख़ेज़ाब व मेहन्दी की रिवायत तो देखी और उन का मतलब अस्ल में ना समझा अव्वल तो वसमा नील को नहीं कहते बल्कि एक और पत्ती है कि मेहन्दी में मिला कर उस के लाल रंग को तेज़ कर देती है वरना ख़ालिस मेहन्दी की लाली गहेरी नहीं होती ।

"क़ामूस" और "ताजूल उरूस" में है ————

الوسمة ورق النيل او نبات اخر يخضب بورقه —

वसमा नील की पत्ती है या कोई दूसरी घास है कि उस की पत्ती से ख़ेज़ाब बनाते है ।

"मग़रिब" में इसी मअ़नी को क़ुबूल किया और वसमा के मअ़नी नील इस बात को कमज़ोर कहा —————

حيث قال الوسمة شجرة ورقها خضاب وقيل يجفف ويطحن ثم يخلط بالحناء فيقنا لونه

इस वजह से कहा कि वसमा एक झाड़ है कि जिसकी पत्ती ख़ेज़ाब है वसमा को नील कहेना कमज़ोर क़ौल है पक्की बात येह है । कि अरब की ज़बान में एक झाड़ का नाम है कि पत्ती सुखा कर पीस कर मेहन्दी में मिलाते है जिस से उस का लाल रंग और बड़ जाता है वरना फीका पीला रंग जैसा होता है ।

यूँ तो بحمد اللہ تعالیٰ — रिवायतों में नील के लिए बिल्कुल पता नहीं और अगर क़ामूस की तरह दोनों मअ़नी बराबर रखे जाऐ जब भी नील वालों का

Scanned by CamScanner

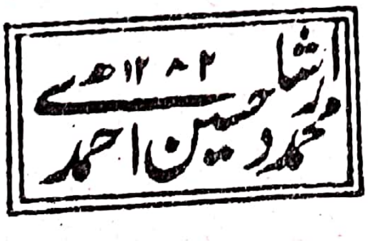
इसे जाइज़ समझना ग़लत कि बिल्कुल मोहतमल कि वोह पत्ती मुराद हो जो मेहन्दी के लाल रंग को तेज़ करती है और फ़र्ज़ कीजिए इन की ख़ातिर मान ही लिजीए कि वसमा से नील मुराद, तो हरगिज़ वोह रिवायतें येह नहीं कहती के पहले मेहन्दी का ख़ेज़ाब कर लीजिए जिससे बाल ख़ूब साफ़ हो जाऐं उस पर वसमा चड़ाइये के काला रंग अपना पूरा अमल दिखाए न येह कि बराए नाम नील में कुछ पत्तियॉ मेहन्दी की ड़ाल कर मिलाने का बहाना कीजिए और काले रंग का पूरा मज़ा हासिल कीज़िए । बल्कि येह मक़सद कि इस वसमा में इत्नी मेहन्दी मिले के वसमा से ज़्यादा आ कर रंग में कालापन न आने दे बल्कि येह मुराद कि अस्ल ख़ेज़ाब मेहन्दी का हो और उस में कुछ पत्तियॉ नील में मिला लीजाए जिस से उस के लाल रंग में एक तरह की पुख़्तगी आ जाए । उस की मिसाल ख़ास येह है कि शराब में नमक मिलाने को ओलमा ने उस की असलियत व उस की तासीर बदलने की वजह बताया कि जब सिरका हो गई हक़ीक़त बदल गई मुबाह हो गई कि वोह शराब ही न रही – उन रिवायतों को देख कर कोई साहब पहले नमक खा कर उपर से शराब पीलें या घड़े भर शराब में एक कंकरी नमक ड़ालकर चड़ा जाए कि हम तो नमक मिला कर पीतें है हालॉकि मक़सद येह था कि नमक उस का जोश बिठा दे खट्टा कर के सिरका बना दे ऐसे बहाने शरीअत में क्या काम दे सकते है ।

कुल मिलाकर सारा मामला रंग पर है । फ़र्ज़ कीजिए अगर ख़ालिस मेहन्दी कालीं रंगत लाती तो वोह भी हराम होती और ख़ालिस नील पीला या लाल रंग देता तो वोह भी जाइज़ होता । यूँही नील और मेहन्दी का मैल या कोई बाला हो जो कुछ काला रंग लाए सब हराम है ।

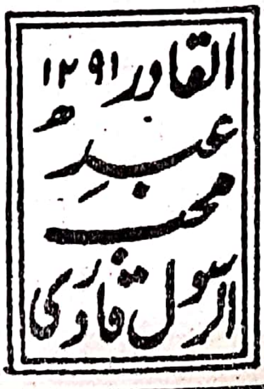
واللہ تعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم

मुहम्मदी, सुन्नी, हनफ़ी, क़ादरी, अब्दुल मुस्तफ़ा अहमद रज़ा ख़ाँ

کتبہ
عبدہ المذنب الفقیر احمد رضا عفی عنہ بمحمدن المصطفیٰ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم







मज़हब सही हनफ़ीया का येह है कि मेहन्दी का ख़ेज़ाब और वसमा हसन है قال فی الغایۃ والخضاب بالحناء والوسمۃ حسن قال فی رد المحتار مذہبنا ان الصبغ بالحناء والوسمۃ حسن انتہی۔

मुहम्मद इरशाद हुसैन रामपूरी

काला ख़ेज़ाब चाहे किसी तरह हो सही रिवायतों व सही हदीसों व फ़िक़ह से कराहत (बुरा होना) साबित,

मसअला

अज़ :— शहर कुहन्ह मुर्सिला शेख़ अब्दुल अज़ीज़ साहब,21 जमादीयुल आख़िर 1314 हिजरी

ख़ेज़ाब काले रंग का यानी मेहन्दी और नील को आपस में मिला कर के बग़ैर किसी शरअई ज़रूरत (यानी जिहाद के अलावा) इस्तेमाल करे तो दुरूस्त है या नहीं और ज़रूरते शरई क्या क्या हैं (यानी कब काला ख़ेज़ाब लागा सकते) है सिर्फ़ मेहन्दी लगाना बेहतर है या नहीं ? सिवाए मेहन्दी के ख़ेज़ाब वग़ैरा के और ख़ेज़ाब भी जैसे "माजू हिलीलह" वग़ैरा का लगाना जाइज़ है या नहीं जवाब हवाले के साथ लिख कर इनायत फ़रमाए ।

अलजवाब

काला ख़ेज़ाब चाहे मजू व हिलीलह व नील का हो चाहे नील व महेन्दी को मिलाकर बनाया गया हो चाहे किसी चीज़ का हो सिवाए मुजाहेदीन (जिहाद में काफ़िरों से लड़ने वालों) के सब को बिल्कुल हराम है और सिर्फ़ मेहन्दी का लाल खेज़ाब या उस मे नील की कुछ पत्तियों इतनी मिला कर जिस से लाल रंग में पुख़्तगी आ जाए और काला रंग न होने पाए पसंदीदा सुन्नत है

शेख मोहक़िक़ अल्लामा अब्दुल हक़ मोहद्दिस दहलवी قدس سرہ الشریف "अशअतुल लिम्आत शरहे मिश्कात शरीफ़" में फ़रमाते है — — —

काला ख़ेज़ाब हराम है सहाबा —ए —किराम वग़ैरा लाल रंग का ख़ेज़ाब || خضاب بسواد حرام است و صحابہ رضی اللہ عنہم

करते थे और कभी पीले रंग का ख़ेज़ाब करते ।

خضاب سرخ می کرد گاہے زرد نیز۔ اھ ملخصا

हदीस में है हुज़ूरे अक़दस सैय्यदे आलम صلی اللہ تعالی علیہ وسلم फ़रमाते है -----

الصُّفْرَةُ خِضَابُ الْمُؤْمِنِ وَالْحُمْرَةُ خِضَابُ الْمُسْلِمِ وَالسَّوَادُ خِضَابُ الْكَافِرِ

पीला ख़ेज़ाब ईमान वालों का हैं और लाल इस्लाम वालों का और काला ख़ेज़ाब काफ़िरों का ।

رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ فِي الْكَبِيْرِ وَالْحَاكِمُ فِي الْمُسْتَدْرَكِ عَنْ اِبْنِ عُمَرَ رضی اللہ عنہما - (रिवायत किया इस हदीस को तबरानी ने अपनी कबीर में और हाकिम ने मुस्तदरिक़ में हज़रत इब्ने उमर से)

मोहीत फिर मुनहुल गफ़्फ़ार फिर रद्दुल मोहतर में اَمَّا الْحُمْرَةُ فَهُوَ سُنَّةُ الرِّجَالِ وَسِيْمَا الْمُسْلِمِيْنَ ___ बहेरहाल लाल ख़ेज़ाब मर्दों के लिए सुन्नत और मुसलमानों के लिए ख़ास है ।

क़ाज़ी ख़ॉ फिर शरहे मशारिक फिर शामी में हैं ---

مَذْهَبُنَا اَنَّ الصَّبْغَ بِالْحِنَّاءِ وَالْوَسْمَةِ حَسَنٌ

हमारा मज़हब यही हैं कि बेशक मेहन्दी और नील का ख़ेज़ाब बेहतर है ।

अहादीस में काले ख़ेज़ाब पर सख़्त सख़्त अज़ाब की ख़बरें आई हैं और मेहन्दी के ख़ेज़ाब की तरग़ीबे बहुत ज़्यादा आई हैं । (यानी मेहन्दी का लाल खेज़ाब लगाने पर ज़ोर दिया गया है) وَ قَدْ حَقَّقْنَا مَسْاَلَةَ تَحْرِيْمِ السَّوَادِ مُطْلَقًا فِي فَتَاوٰنَا بِمَا فِيْهِ شِفَاءٌ وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ عِلْمُهُ وَجَلَّ مَجْدُهُ اَتَمُّ وَاَحْكَمُ -

मकतबतुल मदीना की चंद अज़ीम पेशकश

निदा-ए-या रसूलुल्लाह

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खाँ رضی اللہ عنہ
का एक अज़ीम शाहकार/
या रसूलुल्लाह/
या अली/या ग़ौस,
वग़ैरा कहने के सुबूत में
रू 8/-

तबर्रुकात के आदाब व फ़ज़ाएल

बुज़ूर्गों के तबर्रुकात से बरकत
हासिल करने के सुबूत में
आला हज़रत
का एक नादिर रिसाला
रू 8/-

दावते चहलुम

अज़:- आला हज़रत
सुवम, चहलुम, वग़ैरा में आम दावत
करने के मुत्अल्लिक
शरई हुक्म
रू 7/-

अज़ाने क़ब्र

क़ब्रे मुस्लिम पर दफ़न के बाद
अज़ान देने के सुबूत में
आला हज़रत
का एक अज़ीम इल्मी शाहकार
रू 8/-

नजात नामा

आला हज़रत
का एक और इल्मी कारनामा
जिसमें सैकड़ों हदीसों से मैय्यत के साथ
अ़हेद नामा, शिजराह, तबर्रुकात रखने
का सुबूत हैं
रू 7/-

शफ़ाते मुस्तफ़ा

हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم गुनाह-गारों की
शफ़ाअ़त फ़रमाएगे
इस बात के सुबूत में
आला हज़रत
का मुख़्तसर मगर जामए रिसाला
रू 6/

Scanned by CamScanner